अध्याय - द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

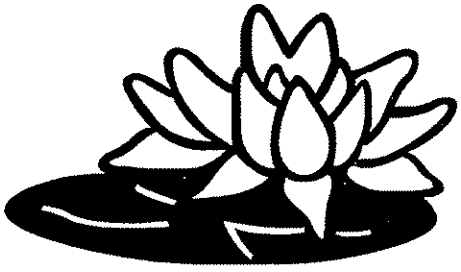

अध्याय द्वितीय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 भूमिका :–

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कदम है चाहे वो किसी भी क्षेत्र का हो। शोध कार्य के अंतर्गत साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक अनिवार्य प्रक्रिया है, क्योंकि यह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा। इसके अभाव में उचित दिशा में अनुसंधान को नहीं बढ़ाया जा सकता। जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है, किस विधि से कार्य किया गया है तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता है।

2.2 संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से लाभ

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिए आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही कार्य आगे बढ़ाया जा सकता है।
3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोक से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।

4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।

5. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

2.3 पूर्व शोध आकलन

पानु.एस.आर. (1964) चण्डीगढ़, पंजाब युनिवर्सिटी के एक छात्र एस. आर. पानू के द्वारा चण्डीगढ़ के माध्यमिक विद्यालय के 80 अध्यापकों के न्यादर्श पर एक अध्ययन किया गया और यह पाया गया कि अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि उनके रूचि के अनुकूल विषयों को पढ़ाने, उनके योग्यतानुसार सम्मान एवं वेतन की मात्रा, पदोन्नति की विधियों एवं अध्यापकों के प्रति लोगों के दृष्टिकोण पर निर्भर है। अध्यापकों की संतुष्टि के अध्ययन के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक कारकों का प्रयोग करते हुए प्रश्नावली प्रपत्र का निर्माण किया गया था एवम् दो बिन्दु तक अर्थपूर्णता के परीक्षण से उपरोक्त निष्कर्ष प्राप्त किये गये। इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि व्यावसायिक संतुष्टि एवं आयु, लिंग, योग्यता एवं वैवाहिक स्थिति में कोई अर्थपूर्ण सम्बन्ध नहीं है।

साक्षात्कार से समक्ष उक्त अनुसंधानकर्ता ने यह भी अनुभव किया है कि अध्यापकों की मानसिक कुंठता का मुख्य कारण विद्यालयीन प्रशासन सम्बन्धी कारक थे। सभी अध्यापकों ने दस ऐसे प्रशासन सम्बन्धी कारक बताए है जो कि विद्यालय में व्यवधान डालते हैं। उनमें में से मुख्य हैं –

(अ) शिक्षण के अतिरिक्त कार्य भार

(ब) विद्यालय का समय

(स) अनुत्तम परीक्षाफल के लिए अध्यापक को दंड

(द) अधिकारियों द्वारा उनके दैनिक कार्य में बाधा।

इन्हीं अध्यापकों से सत्य सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के लिए 10 व्यवसायों में से व्यवसाय चुनकर उन्हें क्रमानुसार लिखने को कहा गया और

यह देखा गया कि उन लोगों ने अध्यापन व्यवयास के लिए सातवां स्थान दिया था। 90 प्रतिशत अध्यापकों का प्रतिवेदन शिक्षण व्यवसाय के विरोध में था। J-266

कमलजीत (1970) चण्डीगढ़ पंजाब विश्वविद्यालय की एम.एड. के ही दूसरी छात्रा ने विद्यालय के प्रशासकों की प्रेरणा एवं संतुष्टि पर अध्ययन किया है जिसमें व्यावसायिक प्राप्ति एवं असंतोष के अध्ययन के लिए इन्होंने स्वयं प्रश्नावली प्रपत्र का निर्माण किया है। इस अध्ययन में प्रेरणा एवं संतुष्टि में 37 का सहसंबंध पाया गया है। इस अध्ययन से यह भी विदित हुआ है कि विद्यालयीन वातारण, प्रेरणा एवं संतुष्टि में सकारात्मक अर्थपूर्ण संबंध है।

उपरोक्त दोनों अध्ययन यद्यपि विभिन्न वर्षो एवं विभिन्न व्यक्तियों पर किये गये हैं फिर भी इन से यह पता चला है कि अध्यापकगण इसलिए मानसिक कुंठा से व्यथित हैं क्योंकि उन्हें उनकी आवश्यकतानुसार पुरस्कार नहीं प्राप्त है। उनकी सबसे बड़ी आवश्यकता यद्यपि सामाजिक मान्यता की है किन्तु प्रशासनीक अधिकारियों से उन्हें यह नहीं मिल रही है। सभी शिक्षक शिक्षण कार्य के अतिरिक्त कार्यभार से दबे हुए है। कभी-कभी उन्हें वे विषय पढ़ाने पड़ते है जिनमें उनकी रूचि नहीं होती। सामाजिक मान्यता एवं आत्मसम्मान की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए उन्हें वेतन एंव पदोन्नति के रूप में पुरूस्कार नहीं प्राप्त है। इसीलिए उन्होंने अपने व्यवसाय को क्रमानुसार निम्न स्थान दिया है एवं अपने बच्चों को इस व्यवसाय के लिए कोई प्रेरणा नहीं देना चाहते है।

सान्धु जे.एस. (1970) उक्त महाविद्यालय के एक दूसरे छात्र ने उत्तर भारत के चार महाविद्यालयों के अध्यापकों की एकेडेमिक स्वतंत्रता का अध्ययन व्यावसायिक संतुष्टि के संदर्भ में किया है। इस अध्ययन मे विश्वविद्यालय के 60 अध्यापकों का न्यादर्श लिया गया था जिसमें 8 प्रोफेसर 12 रीडर 40 लेक्चरर थे। अध्ययन के लिए विज्ञान एवं कला के अध्यापकों की समान संख्या ली गयी थी। न्यादर्श के द्वारा हर महाविश्वविद्यालय के प्रत्येक विभागों के अध्यापक चुने गये थे। सौ प्रश्न वाले प्रश्नावली प्रपत्र को प्रयोग में लाया

गया था जिसमें से 50 प्रश्न एकेडेमिक स्वतंत्रता से संबंधित थे एवं दूसरे 50 प्रश्न व्यावसायिक संतुष्टि से संबंधित थे। इन दोनों कारकों में सहसंबंध मालूम किया गया जिसके अनुसार इन विभिन्न स्तरों के अध्यापकों में स्वीकारात्मक एवं अर्थपूर्ण सम्बन्ध पाया गया जिसका विवरण इस प्रकार है।

	अध्यापक	**सहसंबंध**
1.	प्रोफेसर	.65
2.	रीडर	.47
3.	लेक्चरर	.35

सभी प्रोफेसर ने यह प्रतिवेदन किया कि वे एकेडेमिक स्वतंत्रताओं से विशेष सन्तुष्ट है। 37.5 प्रतिशत प्रोफेसरों में 75 परसेन्टाइल के उपरान्त संतोष था। अनुसंधान में यह भी पाया गया कि प्रोफेसरों में रीडर एवम् प्रवक्ताओं की अपेक्षा एकेडेमिक स्वतंत्रता की सन्तुष्टि अधिक है।

शर्मा, आई.एस. (1970) शिक्षकों की सामाजिक मान्यता एवं आत्मसम्मान के संदर्भ में चण्डीगढ़, पंजाब युनिवर्सिटी के एम.एड. के छात्र का अध्ययन भी महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन के अध्यापकों के द्वंद का अतिमहत्वपूर्ण कारण विद्यालयों में वरिष्ठ अधिकारियों का दमनात्मक दृष्टिकोण पाया गया। अध्यापकों ने बताया कि स्टाफ वरिष्ठ अधिकारियों के संकेत पर काम करता है। इस अध्ययन में सामाजिक मान्यता आत्मसम्मान से बहुत ही कम पाई गई। अस्तु सभी प्रकार के द्वंद परिलक्षित हुए हैं। उक्त अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में यह भी बताया गया है कि शिक्षक का आत्मसम्मान उसके संतोष में बहुत बड़ा प्रेरक है। उसके आत्मसम्मान और उससे प्राप्त सामाजिक मान्यता में उसकी व्यावसायिक संतुष्टि का एक कार्यान्वित सूत्र बन सकता है।

रामकृष्णा, डी. (1980) ने कॉलेज शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि, शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यवसाय सहभाग का अध्ययन किया है। शोधकार्य के उद्देश्य थे कॉलेज शिक्षकों का व्यवसाय संतुष्टि स्तर पर अध्ययन करना, शिक्षकों के व्यक्तित्व, जनतांत्रिक चर एवं व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन करना,

शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति एवं शिक्षण व्यवसाय संतुष्टि के संबंध का अध्ययन करना, व्यवसाय संतुष्टि एवं व्यवसाय सहभाग के संबंध का अध्ययन करना। इसके लिए शासकीय और अशासकीय कॉलेज के 400महिला एवं पुरूष अध्यापकों का चयन बहुस्तरिय यादृच्छिक विधि से किया गया और व्यवसाय संतुष्टि सूची, अध्यापन अभिवृत्ति सूची, व्यवसाय सहभाग सूची, सामाजिक-आर्थिक स्तर सूची का प्रदत्त संकलन हेतु उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए प्रसरण विश्लेषण, टी परीक्षण, काई वर्ग सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि कॉलेज के शिक्षक अपने व्यवसाय में संतुष्ट थे। अशासकीय कॉलेज के शिक्षक शासकीय कॉलेज के शिक्षक से अधिक संतुष्ट थे। महिला शिक्षिका पुरूष शिक्षक से अपने व्यवसाय में अधिक संतुष्ट थी।

सिंह, एस.के. (1988) ने शिक्षक के कक्षा में शाब्दिक संवाद एवं शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य शिक्षकों के व्यवस्थित प्रक्षेपण का विकास एवं प्रक्षेपण व्यवहार और शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति इनके बीच संबंध निर्धारित करना है। इसके लिए 500 बी.एड. छात्र अध्यापको को चुना गया था। इसमें प्रश्न उत्तर विधि का उपयोग किया गया था। प्रदत्त संकलन हेतु मिनसोटा शिक्षक अभिवृत्ति सूची एवं फलॉण्डरस की वर्गवारी विश्लेषण पद्धति को उपयोग किया गया था। अध्यन के निष्कर्ष है शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति के संबंधित प्रश्न अनुपात में शिक्षकों के अध्यापन, विषय ग्रुप चर्चा में सार्थकता पायी गई शिक्षक की अध्यापन, अभिवृत्ति और कक्षाध्यापन में शाब्दिक संवाद में सार्थकता पायी गई।

पाण्डे, उषा (1988) ने महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी की शिक्षण अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन किया है।

निष्कर्ष से पता लगता है कि महिला शिक्षक को अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूचि है। उनके लिये शिक्षण व्यवसाय एक सुवर्ण संधि होती है। क्योंकि दूसरा व्यवसाय जल्द से नहीं मिल पाता इसीलिए महिला अध्यापकों को शिक्षण अध्यापन व्यवसाय में अधिक रूची है।

मिस्त्री, ओ.सी. (1988) ने ग्रामीण शहरी और बिन गुजराती कॉलेज और माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों की अभिवृत्ति, मूल्य और व्यवक्तित्व के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें उन कारकों को खोजा गया जिनसे मूल्यों, अभिवृत्तियों और शहरी, ग्रामीण तथा अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों के जीवन जीने के तरीकों में अन्तर पाया गया। इस अध्ययन हेतु आलपोर्ट की प्रश्नावली, एडवर्ड की व्यक्तिगत महत्व अनुसूची और मर्रे की व्यक्तिगत आवश्यक परीक्षण का उपयोग किया गया। गुजरात के शहरी और ग्रामीण शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से चुना गया। 111 शिक्षकों को शामिल किया गया। अनौपचारिक गुजराती शिक्षकों का एक नियंत्रित ग्रुप भी न्यादर्श के रूप में लिया गया। परिणाम यह आया कि जो गुजराती नहीं थे वे अधिक आत्म केन्द्रित और अधिक अध्ययनशील थे जबकि ग्रामीण–शहरी गुजराती शिक्षक केन्द्रित थे और धार्मिक थे।

महेश्वरी, पी.सी. (1889) ने रोहिलखंड विद्यापीठ के सामान्य, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति के शिक्षकों प्रशिक्षकों का अध्यापन अभिवृत्ति तथा मूल्य, बुद्धि लिंग के संबंध का अध्ययन किया। जिसका मुख्य उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षकों में मूल्य एवं अध्ययन अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना था एवम् उपरोक्त वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में लिंगभेद का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिए रोहिलखंड विद्यापीठ के 10 कॉलेजों से सामान्य वर्ग के 426, पिछड़े वर्ग के 95, अनुसूचित जाति के 97 शिक्षक प्रशिक्षक को न्यादर्श के रूप में चुना गया। प्रदत्तों के संकलन के लिए अहलुवालिया एस.पी. द्वारा निर्मित शिक्षकों की अभिवृत्ति सूची, आर.के. टंडन द्वारा निर्मित समूह बुद्धि परीक्षण, आर.के. ओझा द्वारा निर्मित मूल्य परीक्षण का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए टी परीक्षण तथा सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया।

निष्कर्ष से पता लगता है कि अनुसूचित जाति एवं पिछड़े वर्ग की अपेक्षा सामान्य वर्ग के शिक्षण प्रशिक्षकों में अध्यापन अभिवृत्ति प्राप्तांक में अंतर है, स्त्री–पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों में अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर

नहीं है, सामान्य वर्ग के शिक्षक प्रशिक्षकों में अन्य दो वर्गो की अपेक्षा अध्यापन अभिवृत्ति अधिक देखने को मिलती है।

रेड्डी, बालकृष्णा पी. (1989) ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवम् शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य व्यवसाय संतुष्टि स्तर, अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति और व्यवसाय अभिवृत्ति के स्तर का अध्ययन करना, लिंग, वैवाहिक स्तर, शैक्षिणक योग्यता, कुंटुब का आकार, अनुभव, उम्र तथा व्यक्तित्व कारक के आधार पर व्यवसाय के संबंधो का अध्ययन करना था। इसके लिए बहुस्तरीय स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि से 300 प्राथमिक शिक्षको का चयन किया गया था। प्रदत्तो के संकलन हेतु व्यवसाय संतोष सूची, शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची, कॅटल की 16 पी.एफ. प्रश्नावली का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षको की व्यावसायिक संतुष्टि एवं अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक संबंध होता है। व्यवसाय के विविध कारकों का अभ्यास करने से पता चलता है कि सात कारकों के प्रति शिक्षकों में व्यवसाय संतुष्टि देखने को मिलती है जबकि नौ कारकों के प्रति शिक्षकों में असंतुष्टि दिखाई देती है। व्यक्तित्व के चार कारकों और व्यवसाय सूची को जो शैक्षिक योग्यता के आधार पर वर्गीकृत किया गया है उसमें सार्थक अंतर पाया गया।

बुद्धिसागर, मिना और सनसनवाल, डी.एन. 1991 ने बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों पर अध्ययन किया है। शिक्षण व्यवसाय के प्रति व्यवहार, बुद्धि, अभिवृत्ति का असर एवम् उपलब्धी पर उनके आंतर संबंधो का अध्ययन किया है। निष्कर्ष से पता लगता है कि प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि पर उनकी अभिवृत्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा जबकि बुद्धि का उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।

रेड्डी, बुम एन. (1991) ने आंध्रप्रदेश के माध्यमिक शिक्षकों की अध्यापन अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति का अध्ययन किया है।

उपरोक्त शोधकार्य का उद्देश्य शिक्षकों के लिंग, आयु, विभाग एवं प्रवर्ग का अध्यापन अभिवृत्ति पर प्रभाव जानना यह है। नियमित बी.एड. के 332

प्रशिक्षणार्थी एवं 80 माध्यमिक शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु TAT Test एवं अध्यापन अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, 'टी' अनुपात, सहसंबंध गुणांक और काई वर्ग परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से पता लगता है कि अध्यापको की अध्यापन अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति में सार्थक संबंध है। लिंग, आयु का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

तपोधन, एल.एन. (1991) ने गुजरात राज्य के माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य लिंग, क्षेत्र, जाति, योग्यता, विद्यालय के प्रकार, वैवाहिक स्तर, उम्र एवं अनुभव के आधार पर शिक्षकों का अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण कैसा है यह जानना था। सर्वे विधि से 19 जिले में से 224 विद्यालयों का चयन किया गया। 1644 पुरूष, 942 महिला शिक्षक का चयन किया गया। प्रदत्तों के सकंलन हेतु स्वयं शोधकर्ता ने लिर्कट टाईप अभिवृत्ति सूची प्रमाणीकृत की थी। जिसका निष्कर्ष यह आया कि लिंग, क्षेत्र (शहरी/ ग्रामीण) एवं जाति, इनका अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति पर अधिक प्रभाव पड़ा। योग्यता का शिक्षकों के अध्यापन व्यवसाय पर कोई प्रभाव नहीं दिखाई दिया। क्षेत्र एवं जाति, क्षेत्र एवं योग्यता, जाति एवं योग्यता, लिंग, क्षेत्र, जाति और योग्यता इनके बीच अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

गणपति दास, (1992) ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म संप्रत्यय एवं अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति का अध्ययन किया है।

उपरोक्त शोधकार्य में शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति एवं शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के आत्म संप्रत्यय का अध्ययन करना यह मुख्य उद्देश्य है। नौ अध्यापक महाविद्यालय में से 723 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु अहुवालिया की शिक्षक अभिवृत्ति सूची एवं आत्म संप्रत्यय मापनी का उपयोग किया गया।

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए 'टी' परीक्षण, पिअरसन के सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। उपरोक्त शोध कार्य में यह पाया गया कि महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों में अध्यापन व्यवसाय संबंधी अनुकूल अभिवृत्ति है।

श्रीनिवास, वी. (1992) ने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों का व्यक्तित्व गुण और शिक्षण अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन किया है जिसके उद्देश्य थे प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के अध्यापन दृष्टिकोण का मापन करना, लिंग, सामूहिक अनुभव और व्यवस्थापन के प्रकार इनके आधार पर प्राथमिक शिक्षकों के दृष्टिकोण की सार्थकता का मापन करना, प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यक्तित्व गुणों का लिंग, अनुभव, समुदाय और व्यवस्थापन के प्रकार के आधार पर मापन करना। शोध कार्य के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु व्यक्तिगत जानकारी सूची, शिक्षक अभिवृत्ति सूची एवं शोधकर्ता निर्मित प्रमाणिकृत एवं मुथ्या द्वारा निर्मित बहुउद्दीपक व्यक्तित्व प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी मान, सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष से पता लगता है कि शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग, शिक्षा अनुभव एवं समूह का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। शासकीय विद्यालयों के शिक्षक और अनुदानित विद्यालयों के शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर है। सहानुभूति और अंतर्मुखी व्यक्तित्व के गुणों का शासकीय और अनुदानित विद्यालयों के शिक्षकों पर प्रभाव पड़ता हैं।

सक्सेना, ज्योत्सना (1995) ने शिक्षकों के समायोजन, व्यावसायिक संतुष्टि एवं शिक्षण व्यवसाय से संबंधित अध्यापन अभिवृत्ति के आन्तर संबंधो का अध्ययन किया है। जिसके उद्देश्य है, प्रभावशाली शिक्षक पहचानना तथा शिक्षक का प्रभाव एवं समायोजन में संबंध, शिक्षक का प्रभाव एवं व्यवसाय संतुष्टि में संबंध, शिक्षक का प्रभाव एवं अध्यापन व्यवसाय में अभिवृत्ति इनका संबंध देखना था। शोध कार्य के लिए ग्रामीण क्षेत्र के 33, शहरी क्षेत्र के 22 माध्यमिक विद्यालयों में से 545 शिक्षकों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से चुना

गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु कुड्डी एवं वर्नर द्वारा निर्मित शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया था। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सहसंबंध गुणांक एवं टी परीक्षण सांख्यिकीय विधि का उपयोग किया गया था। निष्कर्ष में पाया गया कि प्रभावशाली एवं अप्रभावशाली शिक्षकों में समायोजन और अपने व्यवसाय के प्रति संतुष्टि है तथा शिक्षण अध्यापन व्यवसाय अभिवृत्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण हैं। शहरी अप्रशिक्षित शिक्षकों का समायोजन ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों से अधिक अच्छा है। कम पदवी वाले शिक्षक का समायोजन पदवीधारक शिक्षक से अधिक अच्छा है। ग्रामीण क्षेत्र के प्रभावशाली शिक्षक अपने व्यवसाय में शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों की तुलना में अधिक संतुष्ट है।

पाण्डे, एम. और मैखूरी, आर. (1999) ने प्रभावशाली और प्रभावहीन शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। इस शोध का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की प्रभावशीलता तथा अप्रभावशीलता का अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में आयु व अनुभव के आधार पर अध्ययन करना था। अनुसंधान कार्य में तेहरी जिले के माध्यमिक स्कूल से 100 शिक्षकों को यादृच्छिक विधि से चयनित किया गया था। प्रदत्त संकलन के लिए कुमार और मुथ्या निर्मित शिक्षक प्रभावशाली मापनी तथा अध्यापन अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन और 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया। निष्कर्ष से पता लगता है कि अधिक तथा कम अनुभव वाले प्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। जबकि अधिक प्रभावशाली अनुभव वाले शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति सकारात्मक पायी गयी। कम अनुभवी प्रभावशाली शिक्षकों से नये अप्रभावशाली शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति निषेधात्मक पायी गयी।

पाण्डा, बी.बी. (2001) ने आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय एवं कार्य संतुष्टि के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। शोध कार्य के उद्देश्य आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण

व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति और विभिन्न वर्गो जैसे की लिंग, अनुभव, स्थान के स्तर के आधार पर अध्ययन करना, आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का कार्य संतुष्टि का लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर अध्ययन करना, आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों का शिक्षण व्यवसाय और कार्य संतुष्टि की अभिवृत्ति के संबंध का अध्ययन करना यह निश्चित किये गये थे। अध्ययन के लिए वर्णानात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु आरब्रॉक (1962) निर्मित शिक्षक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया। अनुसंधानकर्ता द्वारा बनायी गयी और प्रमाणित की गयी व्यवसाय संतुष्टि सूची का उपयोग किया गया। शोधकार्य में पाया गया कि

आसाम और उड़ीसा के ज्यादातर कॉलेज शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति है। दोनों राज्यों के 25 प्रतिशत कॉलेज शिक्षक लिंग, अनुभव, स्थान, स्तर के आधार पर भी शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति रखते हैं। आसाम और उड़ीसा के कॉलेज शिक्षकों में लिंग, अनुभव, स्थान तथा स्तर के आधार पर शिक्षण व्यवसाय अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

निमगड़े, वी.एस. (2004-05) ने बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय के एम. एड. के छात्र ने प्रारम्भिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन किया है। जिसका उद्देश्य प्रारम्भिक विद्यालयों के शिक्षकों में स्थान, लिंग, अनुभव, शैक्षिणिक योग्यता, व्यावसायिक योग्यता, उम्र के आधार पर अध्यापन अभिवृत्ति का अध्ययन करना था। सर्वेक्षण विधि द्वारा 129 अध्यापकों को यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से चुना गया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. एस.पी. अहलुवालिया की अध्यापक अभिवृत्ति सूची का उपयोग किया गया था। निष्कर्ष में पाया गया कि शिक्षक अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग, स्थान, अनुभव, शैक्षणिक योग्यता, व्यावसायिक योग्यता, उम्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

ये सभी अध्ययन जो कि प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति तथा व्यावसायिक संतुष्टि से सम्बन्धित रहे है वे सभी प्राथमिक विद्यालयों, माध्यमिक विद्यालयों एवं विश्वविद्यालय के अध्यापकों से सम्बन्धित हैं। विभिन्न शोधकर्ताओं ने भिन्न-भिन्न कारकों जैसे-आयु, लिंग, योग्यता, वैवाहिक स्थिति एकेडेमिक स्वंतत्रता एवं सामाजिक मान्यता तथा आत्मसम्मान आदि कारकों में अध्यापकों की सन्तुष्टि का अध्ययन किया और देखा कि उनकी मूल आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए उन्हें वेतन एवं पदोन्नति के रूप में कोई पुरस्कार नहीं प्राप्त हैं इसीलिए अधिकांश अध्यापक असन्तुष्ट है।

इस प्रकार संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन से यह ज्ञात होता है कि बहुत से शोधकर्ताओं द्वारा माध्यमिक, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के क्षेत्र में अनुसंधान कार्य किया गया है। प्रायः देखा गया है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के क्षेत्र में बहुत कम अध्ययन हुए हैं। इसीलिए शोधार्थी ने अनुसंधान कार्य के लिए शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया है।

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal